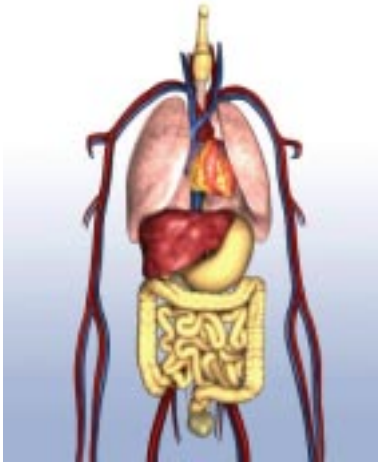

मानव का हर अंग बिकता है

नरेन्द्र देवांगन

मानव अंगों की आउटसोर्सिंग में भी भारत दुनिया के धनी देशों के लोगों की पसंदीदा जगह है। यहां हर अंग के प्रत्यारोपण की सस्ती सुविधा उपलब्ध है। रईस देशों से बड़ी संख्या में लोग अंग खरीदने भारत आते हैं। एक अनुमान के मुताबिक भारत में अवैध रूप से तीन हज़ार गुर्दे, एक सौ लीवर और बड़ी संख्या में पैंक्रियाज़ व कॉर्निया प्रत्यारोपित किए जाते हैं। इनका सालाना कारोबार करोड़ों में होता है। इसके अलावा मानव अंगों का व्यापार स्टेम सेल रिसर्च जैसे शोध कार्य के लिए भी होता है।

हाल ही में गुड़गांव में जिस किडनी रैकेट का खुलासा हुआ है, वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे मानव अंगों के अवैध कारोबार की झलक मात्र है। एक आकलन के अनुसार पूरी दुनिया में यह कारोबार अरबों डॉलर प्रति वर्ष तक पहुंच चुका है। एशिया के गरीब देश इसके लिए सबसे बड़ी मंडी बने हुए हैं। वैसे अमेरिका और युरोप भी इससे अछूते नहीं हैं। भारत में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और आंध्रप्रदेश में इस तरह के कई मामले प्रकाश में आए हैं।

पिछले दिनों अंगदान करने वाले और प्रत्यारोपण कराने वालों की संख्या में खासा इजाफा हुआ है। आधुनिक चिकित्सा तकनीक ने इस काम को बेहद आसान कर दिया है। 80 के दशक में आई दवा साइक्लोस्पोरिन के ज़रिए यह संभव हो गया है कि किसी व्यक्ति का कोई भी अंग दूसरे व्यक्ति के शरीर में लगाया जा सकता है और वह भलीभांति काम भी करता है। इस दवा के बाज़ार में आने के बाद ही भारत, चीन और फिलीपींस जैसे देशों में जाकर अंग प्रत्यारोपित करवाने वाले विदेशियों की संख्या में अचानक इजाफा हुआ। इसे रोकने के लिए 1994 में भारत में कानून भी बनाया गया है।

भारतः पसंदीदा देश

सस्ती आई.टी. सेवाओं के कारण भारत दुनिया भर की कंपनियों के लिए आउटसोर्सिंग की पसंदीदा जगह है। लेकिन यह आई.टी. सेवाओं तक सीमित नहीं है। मानव अंगों की आउटसोर्सिंग में भी भारत दुनिया के धनी देशों के लोगों की पसंदीदा जगह है। यहां हर अंग के प्रत्यारोपण की सस्ती सुविधा उपलब्ध है। इसलिए ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, ब्रिटेन से लेकर सउदी अरब, कुवैत, ओमान, संयुक्त अरब अमीरात आदि देशों से बड़ी संख्या में लोग अंग खरीदने भारत आते हैं।

एक अनुमान के मुताबिक भारत में हर साल खरीद-फरोख्त के जरिए अवैध रूप से तीन हज़ार गुर्दे, एक सौ लीवर और बड़ी संख्या में पैंक्रियाज़ व कॉर्निया प्रत्यारोपित किए जाते हैं। इनका सालाना कारोबार करोड़ों में होता है। इसके अलावा मानव अंगों का व्यापार स्टेम सेल रिसर्च जैसे शोध के लिए भी होता है। विकसित देशों में इसका बड़ा बाज़ार है।

पश्चिमी देशों में गुर्दा प्रत्यारोपण और डाएलिसिस दोनों काफी महंगे हैं। प्रत्यारोपण का औसत खर्च वहां एक लाख डॉलर से ज़्यादा होता है, लेकिन भारत में यह काम बीस हज़ार डॉलर में हो जाता है। भारत में किडनी की कीमत बीस हज़ार रुपए से लेकर तीन लाख तक लगाई जाती है।

कानूनी रूप से प्रत्यारोपण होने पर अंगदाता को ज़्यादा पैसे मिलते हैं। हालांकि वह भी कानून के मुताबिक नहीं होता, क्योंकि 1994 में बने कानून के मुताबिक करीबी रिश्तेदार या दोस्त मरीज़ के साथ भावानात्मक

जुड़ाव के आधार पर ही अपना अंगदान कर सकता है, उसकी खरीद-फरोख्त नहीं हो सकती है।

_ऑर्गन वॉच_ नामक संस्था के वैश्विक सर्वेक्षण से पता चला है कि जिन दस देशों में मानव अंगों का अवैध व्यापार सबसे अधिक होता है, उनमें भारत भी है।

कानून की खामियों का लाभ उठाकर धनी लोग किसी ज़रूरतमंद को रिश्तेदार या दोस्त बनाकर अंगदान करवा लेते हैं। ऐसे मामलों में अंगदान करने वालों को पचास हज़ार से एक लाख रुपए तक मिलते हैं। तीसरा तरीका जबरन मानव अंग हासिल करने का है।

कानून

मानव अंगों के अवैध व्यापार को रोकने के लिए मानव अंग प्रत्यारोपण कानून 1994 बनाया गया था। इसके ज़रिए मृतकों के अंग निकालकर दूसरे व्यक्ति के शरीर में लगाने की प्रक्रिया को कानूनी रूप दिया गया। इससे पहले माना जाता था कि व्यक्ति के दिल की धड़कन बंद न होने तक उसे मृत नहीं माना जा सकता, लेकिन नए कानून के बाद दिमागी मृत्यु को कानूनी स्वीकृति दे दी गई। इससे लीवर, हृदय, पैंक्रियाज़, कॉर्निया आदि के प्रत्यारोपण को कानूनी रूप मिल गया। इसके बाद ही लीवर और हृदय का प्रत्यारोपण संभव हो पाया।

इसके मुताबिक नज़दीकी रिश्तेदार अंगदान कर सकते हैं, लेकिन भावनात्मक जुड़ाव के आधार पर अंगदान करने का इच्छुक व्यक्ति अथॉराइज़ेशन कमेटी की मंज़ूरी मिलने के बाद ही अंगदान कर सकता था। यह कानून विफल रहा है।

कौन-कौन-से अंग

वैसे तो मानव के कई अंगों की बिक्री होती है, लेकिन अधिकांश गुर्दों के मामले प्रकाश में आते हैं। अंगों के अवैध कारोबार में दुनिया में गुर्दों की सबसे ज़्यादा मांग बताई जाती है। इसके सौदे चालीस से पचास हजार डॉलर तक में होते हैं। भारत में भी गुर्दों के काफी खरीददार हैं।

विज्ञान ने अभी इतनी तरक्की नहीं की है कि मस्तिष्क की अदला-बदली हो सके। फिर भी अध्ययन के लिए इसकी मांग रहती है।

मानव अंगों के सौदागर लीवर के सौदे एक से डेढ़ लाख डॉलर में करते हैं। इनके ज़्यादातर खरीददार युरोप और अन्य विकसित देशों के होते हैं, जबकि बेचने वाले एशिया के गरीब मुल्क।

हालांकि कृत्रिम घुटना उपलब्ध है, लेकिन उसमें घुमाव की सीमाएं हैं। इसलिए मानवीय घुटने के खरीददार मिल ही जाते हैं। इसी प्रकार से नेत्र के हिस्सों (रेटिना और लेंस) की भी मांग रहती है। दलाल इसके लिए दस-बीस हज़ार डॉलर वसूलते हैं।

हृदय वाल्व कृत्रिम रूप से भी बना लिए गए हैं और पूर्ण हृदय प्रत्यारोपण के मामले ज़्यादातर सफल नहीं हो पाए हैं। फिर भी दिल का सौदा एक लाख डॉलर से ऊपर ही होता है।

एक सर्वेक्षण

दुनिया भर में मानव अंगों के व्यापार पर नज़र रखने और इसे रोकने के लिए *ऑर्गन वॉच* नामक संस्था के वैश्विक सर्वेक्षण से पता चला है कि जिन दस देशों में मानव अंगों का अवैध व्यापार सबसे अधिक होता है, उनमें भारत भी है। इनमें अर्जेंटाइना, ब्राज़ील, क्यूबा, इस्राइल, तुर्की, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका और ब्रिटेन भी शामिल हैं। शोध से पता चलता है कि मृतकों से चोरी-छिपे अंग निकालने का धंधा सबसे अधिक अर्जेंटाइना और दक्षिण अफ्रीका में होता है। यह काम मृतक के परिजनों को बताए बगैर किया जाता है। भारत के कई अस्पतालों में भी इस तरह के मामले सामने आए हैं।

ईरान में गुर्दों का व्यापार वैध है। वहां यह काम सरकार द्वारा मंज़ूरी प्राप्त दो एन.जी.ओ. *चैरिटी एसोसिएशन फॉर द सपोर्ट ऑफ किडनी पेशेंट* और *चैरिटी फाउंडेशन फॉर स्पेशल डिज़ीज़* करते हैं। ये संस्थाएं मरीज़ और अंगदाता को मिलाती हैं और प्रत्यारोपण सुनिश्चित करती हैं। इसमें दाता को सरकारी

फंड से पैसा दिया जाता है।

जर्मनी की न्यूज एजेंसी डी.पी.ए. ने फरवरी 2007 में खुलासा किया था कि मोलदोवा से बड़े पैमाने पर पूरी दुनिया में मानवीय अंगों की तस्करी हो रही है। यहां हर 6 मिनट में किसी न किसी का अंग निकालकर बेचा जा रहा है। मोलदोवा पहले सोवियत संघ का हिस्सा था अब दुनिया का सबसे गरीब देश है। यहां की अस्सी फीसदी आबादी की आमदनी प्रतिदिन एक डॉलर से कम है। आबादी की बड़ी संख्या अंग बेचकर या देह व्यापार से अपनी रोज़ी-रोटी चलाती है।

एक पत्रकार रूपर्ट विंगफील्ड ने चीन की जेलों में चल रहे अंग व्यापार का खुलासा किया था। तियानजिन सेंट्रल अस्पताल के पदाधिकारियों ने उसके पिता के लिए लीवर दिलवाने के लिए 94400 डॉलर में सौदा किया था। इस मामले में और पड़ताल करने पर पता चला कि चीन की जेलों में हर साल मौत की सज़ा पाए कैदियों और अन्य के दो से तीन हज़ार अंग बेचे जाते हैं। तियानजिन के सेंट्रल अस्पताल में ही वर्ष 2005 में 600 से ज़्यादा लीवर प्रत्यारोपण किए गए थे। इस मामले में चीनी डॉक्टर वांग ग्योकी की गिरफ्तारी भी हुई थी।

चीन ने मौत की सज़ा पाए अपराधियों के अंगों की बिक्री का कानून बनाया है। *एम्नेस्टी इंटरनेशनल* के आंकड़ों के मुताबिक चीन में प्रति वर्ष औसतन एक हज़ार से बारह सौ लोगों को मौत की सज़ा दी जाती है। लेकिन अनाधिकृत आंकड़ों के मुताबिक चीन में हर साल साढ़े चार हज़ार लोगों को मौत की सज़ा दी जाती है और इनमें से करीब तीन हज़ार के सभी महत्वपूर्ण अंग बेचे जाते हैं। यह काम सरकार की देख-रेख में दक्ष डॉक्टर करते हैं। जिनके पास पैसा है वे कानूनी रूप से हर अंग चीन में प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन वहां यह काम भारत के मुकाबले महंगा होता है। चीन में अंगों की अधिकारिक कीमत लगभग इस प्रकार है: लीवर 12 लाख रुपए, किडनी 8 लाख रुपए, कॉर्निया और पैंक्रियाज़ 2 लाख रुपए।

मार्च 2004 में अमेरिका के लॉस एंजिल्स में बड़े पैमाने पर मानव अंगों की तस्करी का खुलासा हुआ था। इस मामले में पुलिस ने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय (लॉस एंजिल्स) के *वाइल्ड बॉडी प्रोग्राम* के निदेशक हेनरी रीड को गिरफ्तार किया था। उन्होंने इस धंधे से लाखों डॉलर कमाने की बात कबूली थी। उनके साथ एक डीलर अर्नेस्ट नेलसन को भी गिरफ्तार किया गया था। उसने विश्वविद्यालय के फ्रीज़र तक पहुंचने के लिए सात लाख डॉलर दिए थे और आठ सौ अंग निकाले थे।

लैटिन अमेरिकी देश ब्राज़ील में बच्चों और किशोरों के अपहरण का सबसे बड़ा कारण मानव अंगों का व्यापार माना जाता है। वहां अनेक गिरोह काम करते हैं और अनुमानतः हर साल 6 हज़ार से अधिक बच्चों का अपहरण होता है। भारत में हर साल करीब पैंतालिस हज़ार बच्चे गायब होते हैं, जिनमें से बारह हज़ार बच्चों का कोई सुराग नहीं मिलता है। एक अनुमान के मुताबिक इनमें से एक चौथाई बच्चे मार दिए जाते हैं और उनके अंग निकाल लिए जाते हैं, जिनका अवैध कारोबार होता है। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 42 का हल

ओ	ज़ो	न	■	पा	च	न	तं	त्र
स	■	ह	ज़ा	र	■	म	■	■
■	■	र	■	द	म	क	ल	■
प्र	■	■	फ	र्शी	■	■	की	प
स	म	त	ल	■	क	स	र	त
व	ट	■	■	अ	ब	■	■	न
■	का	र	ना	मा	■	मा	■	■
■	■	ज	■	व	म	न	■	बी
प्रा	कृ	त	वा	स	■	क	र	घा